टेलीफिल्म निर्माण की प्रविधि

डॉ. सिद्धेश्वर विठ्ठल गायकवाड
सहयोगी प्राध्यापक व हिंदी विभाग प्रमुख,
भारतीय जैन संघटना का कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
वाघोली ता.हवेली जि.पुणे.पिन.412207

प्रस्तावना:

साहित्य एवं टेलीफिल्म अलग - अलग कला के दो रूप हैं।जब एक कलाकृति का दूसरी कलाकृति में फिल्मांतरण होता है, तब बडे स्तर पर परिवर्तन किए जाते हैं। आधुनिक काल में हिंदी कथा साहित्य पर आधारित कई टेलीफिल्मों का निर्माण हुआ है।इस दृश्यात्मक विधा की तरफ दर्शकों का ध्यान दिन ब दिन अधिक आकर्षित होता हुआ पाया जा रहा है। आज के भौतिक युग में टेलीफिल्मों ने अनेक व्यक्तियों को रोजगार के कई अवसर उपलब्ध कराएँ हैं।कई साहित्यिक रचनाओं ने कई लोगों के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालते हुए उन्हें टेलीफिल्म बनाने के लिए विवष किया है। हिंदी कहानियों पर आधारित बनी टेलीफिल्मों की एक लंबी सूचि बनाई जा सकती है।आत: टेलीफिल्म (चलचित्र) निर्माण की अपनी एक कला है इसकी प्रविधि निम्न बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट की जा सकती है।

1. ऑनलाइन स्टोरी:

हिंदी कथा साहित्य पर आधारित विभिन्न टेलीफिल्मों में निहित विषय (केंद्रीय भाव)को निर्देशक फिल्म बनाते समय मौखिक वाणी में बयान करता है इसे ही ऑनलाइन स्टोरी कहा जाता है। इस संदर्भ में असगर वजाहत लिखते हैं-" फिल्म का विषय कोई उपन्यास नाटक भी हो सकता है। विषय की विविधता के हिसाब से उसकी लंबाई हो सकती है,परंतु निर्माता को मौखिक तौर पर बताते वक्त उसे कुछ वाक्य में ही बयान करना पडता है इसे ही वाक्य की कहानी या ऑनलाइन स्टोरी कहा जाता है।"[1]

2. पात्रों का चुनाव :

टेलीफिल्म निर्माण हेतु विषय के अनुकूल पात्रों अर्थात नायक-नायिकाओं का चुनाव करना पडता है। निर्माता- निर्देशक पहले पात्रों की अनुमति लेते हैं, उसके बाद उन्हें कहानी पडने के लिए दी जाती है। अर्थात पात्रों के चुनाव के बाद उनकी स्वीकृति आवश्यक होती है।

3. पटकथा का निर्माण:

मूल कहानी को पटकथा में ढॉले बिना कोई भी टेलीफिल्म निर्माण नहीं हो सकती है। पटकथाकार

कहानी में वर्णित विषय को पटकथा में परिवर्तित करता है। कहानी के फिल्मांतरण के अनुरूप पटकथाकार पटकथा की रुपरेखा तयार करता है।

4. संवाद लेखन:

पटकथा लेखन की तैयारी के साथ संवादों का लेखन कार्य भी जारी रहता है। स्थान, समय,काल,पात्रों के चरित्र के अनुरूप संवाद लेखन करना पडता है। जैसे "पूस की रात" टेलीफिल्म में हल्कू की की भूमिका निभाने वाला पात्र रघुवीर यादव के संवाद देखिए "रघुवीर यादव :- (रघु) पता है माघ-पूस की रात कैसे कटेगी खेतों में! कभी सोचा है ?मानसी उपाध्याय :- (मुन्नी) पता नहीं, तीन रुपए ही है,कंबल कहाँ से आएगा।"[2]

इस प्रकार संवादों की निर्मिती करते समय छोटे,सहज,सरल, संवादों का लेखन पटकथाकार को करना पडता है। उपर्युक्त संवाद दोनों की आर्थिक स्थिति को वाणी देता है।

5. बजेट बनाना:

सिनेमा के समान छोटे पर्दे पर प्रस्तुत होनेवाली टेलीफिल्म का बजट ज्यादा नहीं होता है।परंतु पात्रों का चयन, निर्देशक,सहाय्यक निर्देशक, तथा उसके जैसे क्रू मेंबर का चयन और उसके अनुरूप खर्च का समायोजन करना पडता है। बजेट की व्यवस्था के अभाव में टेलीफिल्म का निर्माण कार्य संभव नहीं है।

6. शूटिंग शेड्युल बनाना:

निर्माता- निर्देशक निश्चित समय के अनुसार शूटिंग शेड्युल बनाते हैं। टेलीफिल्म में निर्देशक ही शूटिंग के बाद पोस्ट प्रोडक्शन का भी दायित्व निभाते हैं।" शूटिंग शेड्युल में सबसे पहले शूटिंग की तारीख लिखी जाती है कि दिनांक फला से दिनांक फला तक शूटिंग की जाएगी।इसके के लिए एक दिन पहले अपने शहर से चलकर गंतव्य पर इस दिन पहुँचना पडता है। अगले दिन, की तिथि, दिन तथा समय का उल्लेख करते समय सीन नंबर, कलाकारों के नाम, तथा लोकेशन इंगीत कर इसे रेखांकित कर दिया जाता है।"[3]

7. संगीत एवं गीत:

टेलीफिल्म की प्रभावात्मकता बढाने हेतु निर्देशक प्रसंग के अनुकूल संगीत एवं गीतकार की सहायता से गीत संगीत की योजना करता है। संगीत कंपोजर को पूरी फिल्म दिखाकर संगीत रिकॉर्ड किया जाता है।

8. डबिंग:

संपादक सारी पार्श्व ध्वनियों, संवादों और विशेष ध्वनि प्रभाव को फिल्म के साथ जोड देता है।यह प्रक्रिया

डबिंग कहलाती है। संवादों को डब करने के लिए हीरो हीरोइन को स्टुडिओ में आना पडता है।डबिंग पूरी होने पर इसे दृश्य फिल्म के साथ तकनीकी दक्षता से जोड दिया जाता है।

9. रि- रिकॉर्डिंग

पूरी टेलीफिल्म का रि-रिकॉर्डिंग होता है। इसी समय गीत,विज्ञापन द्वारा प्रस्तुत टेलीफिल्म का विज्ञापन करते हुए दर्शक वर्ग को जागृत करने का भी कार्य किया जाता है। इस प्रकार मास्टर और स्टैंडबाई स्टेप्स को प्रसारण के लिए दिए जाने से पूर्व निर्देशक, कलाकारों के नाम भी दिए जाते हैं। इसके साथ लोकेशन का नाम और सहाय्यक सिद्ध हुए व्यक्तियों के नाम भी आभार के रूप में चलचित्र में प्रसिद्ध होते हैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि साहित्य पर आधारित टेलीफिल्म में सामाजिक यथार्थ के साथ-साथ कल्पना तत्व का भी सहारा लिया जाता है। उपर्युक्त तकनीकी के माध्यम से पार्श्वसंगीत, ध्वनि रिकॉर्डिंग के साथ चलचित्र में निहित दृश्य को विषय वस्तु के अनुसार अधिक गहराई और संपूर्णता के साथ व्यक्त किया जाता है बिंब,प्रतीकों के प्रयोग से निहित विषय दर्शक वर्ग तक अधिक सरलता के साथ पहुँचत है।अत: मूल कहानी में इसके लिए निर्देशक कुछ परिवर्तन भी करते हैं। इस संदर्भ में डॉ. सुधीर पचौरी लिखते हैं- " कोई भी लिखित कथा साहित्य जब टी.वी.या फिल्म में प्रस्तुत किया जाता है तो उसमें नए माध्यम की संरचनात्मक जरूरतों के आधार पर थोडाबहुत परिवर्तन अनिवार्य है।"[4] उपयुक्त प्रविधि के अनुसार कहा जा सकता है कि टेलीफिल्म निर्माण कार्य आसान नहीं है वह एक जटिल एवं संश्लिष्ट प्रक्रिया है। निर्माता- निर्देशक के साथ अन्य क्रू मेंबर की भूमिका इसमें अद्वितीय होती है।

संदर्भ:

1. टेलीव्हिजन लेखन, असगत वजाहत, प्रभात रंजन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003(पृ.सं.97)

2.पूस की रात टेलीफिल्म से

3. टेलीफिल्म: निर्माण कला, विवेकानंद, सामायिक प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 2014,(पृ.सं.15)

4. मीडिया और साहित्य, डॉ. सुधीर पचौरी, प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000 (पृ.सं. 114)